आदिकालीन इतिहास

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
एक

एक सिद्ध संसार

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-सूची

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

तैयारी **5**

नोट्स **6**

I. परिचय **(0:28) 6**

II. सिंहावलोकन **(2:44) 6**

A. अभिप्रेरणा (3:13) 6

1. विश्वसनीयता (3:37) 6
2. रूपरेखा (4:35) 7

B. पृष्ठभूमि (5:32) 7

1. उपलब्धता (5:58) 7
2. पारस्परिक सम्पर्क (7:10) 8

C. उद्देश्य (10:35) 9

III. साहित्यिक संरचना **(15:13) 9**

A. अन्धकारमय अव्यवस्थित संसार (17:28) 9

B. आदर्श संसार (19:40) 10

C. क्रमबद्धता के छ: दिन (20:52) 11

IV. मूल अर्थ **(26:05) 12**

A. अन्धकारमय अव्यवस्थित संसार (27:05) 12

B. आदर्श संसार (31:47) 14

C. क्रमबद्धता के छ: दिन (36:36) 15

1. मिस्र से छुटकारा (37:14) 15
2. कनान पर अधिकार (40:31) 16

V. आधुनिक उपयोग **(43:32) 17**

A. उदघाटन (46:56) 18

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. निरन्तरता (51:52) 19

C. पराकाष्ठा (54:46) 20

VI. सारांश (59:09) 21

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 22

उपयोग के प्रश्न 29

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अन्तराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अन्तराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें** — जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - **पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें** — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - **उपयोग के प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें** — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

तैयारी

- पढ़ें उत्पत्ति 1:1–2:3

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. **परिचय (0:28)**

परमेश्वर चाहता था कि इस्राएल के लोग मूसा के नेतृत्व का अनुसरण करें।

मूसा न केवल हमें यह दिखाता है कि कैसी बातें आरम्भ में थी, अपितु कैसे अब जीवन होना चाहिए, और कैसे हमारा संसार निश्चित ही हमारे युग में अंत के समय पर होगा।

II. **सिंहावलोकन (2:44)**

A. **अभिप्रेरणा (3:13)**

1. **विश्वसनीयता (3:37)**

बाइबल का यह हिस्सा पूरी तरह से विश्वसनीय है क्योंकि यह दैवीय प्रेरित है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मूसा की मंशा यह थी कि उसके मूल पाठक उत्पत्ति के इस हिस्से को ऐतिहासिक सत्य के रूप में प्राप्त करें।

2. रूपरेखा (4:35)

परमेश्वर ने मूसा को इन अध्यायों को एक विशेष रूपरेखा के अनुसार चुनने और इसकी विषय वस्तु को व्यवस्थित रखने के लिए प्रेरित किया।

B. पृष्ठभूमि (5:32)

1. उपलब्धता (5:58)

उस समय तक निकट पूर्व के बहुत से राष्ट्रों और समूहों ने पहले से ही आदिकालीन इतिहास के बारे में कई तरह की कपोल कथाओं और मिथकों को लिख दिया था।

मूसा मिस्र के राजकीय दरबार में शिक्षित हुआ था। उसके लेखों से संकेत मिलता है कि वह प्राचीन संसार के साहित्य को जानता था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. पारस्परिक सम्पर्क (7:10)

मूसा ने आरम्भिक समयों के अपने इतिहास को झूठ का सामना सत्य से करने के लिए लिखा।

उसके लेख उद्देश्यपूर्ण रूप से अन्य प्राचीन निकट पूर्वी लेखों के साथ मिलते जुलते हैं ताकि वह परमेश्वर के सत्य को इस तरीके से सम्प्रेषित कर सके जिसे इस्राएल समझ सके।

अतर्शीश महाकाव्य एक त्रि-भागी संरचना का पालन करता है।

अतर्शीश की तुलना उत्पत्ति के साथ से करने से इस विचार को दृढ़ता से समर्थन मिलता है कि मूसा ने उसके अभिलेख को जानबूझकर व्यापक संरचना के साथ निर्मित किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. उद्देश्य (10:35)

मूसा चाहता था :

- इस्राएलियों को अतीत के बारे में सत्य की शिक्षा देना।
- इस्राएलियों को उनके विश्वास के ऐतिहासिक सत्यों को समझाना।

III. साहित्यिक संरचना (15:13)

इस हिस्से के तीन मुख्य चरण हैं।

A. अन्धकारमय अव्यवस्थित संसार (17:28)

संसार "बेडौल और सुनसान" है।

बहुत से विद्वान यह विश्वास करते हैं कि इसका अर्थ यह है कि संसार निर्जन, मनुष्य जीवन का विरोधी था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था।

B. आदर्श संसार (19:40)

मूसा ने इसलिए भी लिखा ताकि वह इस्राएलियों को उनके प्रति परमेश्वर की इच्छा के लिए प्रभावित कर सके। अन्य आदिकालीन लेख भी इस जैसे प्रयोजनों को साझा करते हैं।

इस्राएल के चारों ओर की संस्कृतियों ने उनके आदिकालीन इतिहास को उनके समकालीन धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों के औचित्य को प्रमाणित करने के लिए लिखा था।

उनकी मिथक कथाओं ने लोगों को देवताओं के द्वारा सृष्टि का सृजन किया, उस संरचना को जिसे उन्होंने ब्रह्माण्ड के लिए निर्धारित किया था, की पुष्टि करने के लिए बुलाहट दी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मूसा ने उन तरीकों पर ध्यान दिया जिसमें यहोवा ने प्राचीन समयों में संसार को सृजा और क्रमबद्ध किया था।

मूसा नीतियाँ और लक्ष्य ब्रह्माण्ड के लिए परमेश्वर की रूपरेखा के प्रति सच्चे थे।

इस्राएल कनान की ओर बढ़ने के द्वारा परमेश्वर के आदर्श की ओर बढ़ रहा था।

जब परमेश्वर ने सब्त के विश्राम में प्रवेश किया अव्यवस्था और परमेश्वर की मण्डलाती हुई आत्मा के मध्य में तनाव का समाधान हो गया।

C. क्रमबद्धता के छ: दिन (20:52)

परमेश्वर का वचन संसार को एक व्यवस्थित रूप में लेकर आया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर की सृष्टि की क्रमबद्धता के दिन तीन दिनों को मिलाकर दो वर्गों की श्रेणियों में आते हैं :

- दिन 1 से लेकर 3 : परमेश्वर ने पृथ्वी की बेडौलता के साथ निपटारा प्रथम तीन दिनों में क्षेत्रों का निर्माण करते हुए किया।

- दिन 4 से लेकर 6 : परमेश्वर ने पृथ्वी के सुनसान अर्थात् शून्यता के साथ निपटारा इन निम्न क्षेत्रों में रहने वालों का सृजन करके किया।

परमेश्वर अद्‌भुत तरीके से जो कुछ उसने बनाया था उसे लेकर प्रसन्न हुआ था।

IV. मूल अर्थ (26:05)

A. अन्धकारमय अव्यवस्थित संसार (27:05)

उत्पत्ति की पहली दो आयतों के सबसे महत्वपूर्ण गुण नाटकीय तनाव के रूप से आयत 2 में ही परिचित कराए गए हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

व्यवस्थाविवरण 32:10-12 में मूसा ने उत्पत्ति 12:10 की शब्दावली का उपयोग इनमें संबंध दिखाने के लिए किया है :

- इस्राएल के पलायन

- सृष्टि के लेख

मूसा ने शब्द "सुनसान" को मिस्र के ऊपर लागू किया।

मूसा ने शब्द “मण्डलाने” को इस्राएल में परमेश्वर की उपस्थिति के लिए उपयोग किया।

व्यवस्थाविवरण 32:10-12 मूसा के अपने लेख उत्पत्ति 1:2 का टीका था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मूसा ने सृष्टि के समय किए गए परमेश्वर के कार्य को एक नमूने, एक पद्धति, या एक दृष्टान्त के रूप में प्रस्तुत किया, जो यह व्याख्या करता है कि परमेश्वर उसके दिनों में इस्राएल के राष्ट्र के लिए क्या कर रहा था।

इस्राएल का मिस्र से छुटकारा किसी भी तरह से पुन:सृष्टि किए जाने से कम नहीं था।

B. आदर्श संसार (31:47)

शब्द “सब्त” सृष्टि की कहानी को इस्राएल के पलायन के साथ जोड़ता है।

सब्त के दिन परमेश्वर की आराधना का पालन इस्राएलियों द्वारा पालन की गई किसी भी बात की अपेक्षा एक बहुत ही जटिल बात थी जब वे जंगल में यात्रा कर रहे थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

सब्त का पूरी तरह से पालन तब तक पूरी रीति से नहीं हो पाया जब तक इस्राएली विश्राम की भूमि में प्रवेश नहीं कर गए।

मिस्र को छोड़ना और प्रतिज्ञा की हुई भूमि में प्रवेश करना परमेश्वर की सृष्टि के लिए सिद्ध योजना के साथ एकजुट होना था।

C. क्रमबद्धता के छ: दिन (36:36)

1. मिस्र से छुटकारा (37:14)

परमेश्वर ने उसी तरह की सामर्थ्य का प्रदर्शन किया जिस तरह की सामर्थ्य को उसने :

- मिस्र से इस्राएल के छुटकारे में प्रदर्शित किया था
- उत्पत्ति 1 में सृष्टि की क्रमबद्धता के समय प्रदर्शित किया था

कोई भी इस्राएली जिसने यह विश्वास किया कि मिस्र में जीवन अच्छा था मूसा के द्वारा रचित सृष्टि के लेख के साथ मिला कर सोचना था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

सृष्टि के छ: दिनों की मिस्र के छुटकारे के साथ समानता है।

2. कनान पर अधिकार (40:31)

इस्राएली सृष्टि में इस आदर्श स्थिति को पूरा करेंगे :

- मूसा के नेतृत्व की अधीनता में
- प्रतिज्ञा की भूमि में

कनान की भूमि परमेश्वर के द्वारा आरम्भ में रचे हुए क्रमबद्ध संसार की तरह होगी।

परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र की अव्यवस्था से सब्त के विश्राम की ओर कनान में ले जा रहा था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

V. आधुनिक उपयोग (43:32)

नया नियम उत्पत्ति 1:1-2:3 को एक बहुत ही बड़े छुटकारे की प्रतिछाया के रूप में देखता है।

मसीह महान् उद्धार और न्याय को इस संसार में तीन अवस्थाओं में लेकर आया था।

- राज्य का उदघाटन
- राज्य की निरन्तरता
- राज्य की पराकाष्ठा या शिरो-बिन्दु

मसीह नेउसके लोगों के उद्धार के लिए बहुत कुछ तब स्थापित किया जब वह पहली बार इस पृथ्वी के ऊपर आया था (राज्य का उदघाटन)।

अब परमेश्वर का बचाने वाला अनुग्रह इस संसार के ऊपर विस्तारित सुसमाचार के प्रचार के द्वारा होता जाता है (राज्य की निरन्तरता)।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उद्धार इसकी परिपूर्णता में तब आएगा जब मसीह महिमा में वापस आएगा (राज्य की पराकाष्ठा या शिरो-बिन्दु)।

A. उदघाटन (46:56)

यूहन्ना 1:4-5 :
"उसमें जीवन था; और वह जीवन मुनष्यों की ज्योति थी। ज्योति अन्धकार में चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।"

यूहन्ना निरन्तर उत्पत्ति 1 विषयों के ऊपर ध्यान करता है, विशेषकर उस ज्योति के आलोक में जिसे परमेश्वर इस अन्धकारमय अव्यवस्थित संसार के पहले दिन में लेकर आया था।

यूहन्ना ने मसीह के देहधारण की ओर ऐसे संकेत दिया कि यह वह ज्योति है जो कि पाप के द्वारा प्रभावित संसार के अन्धकार में चमक रही है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मसीह का अनुसरण करने वाले उत्पत्ति 1 को एक चित्र, एक पूर्वानुमान के रूप में, जो कुछ परमेश्वर ने मसीह में उसके प्रथम आगमन के समय में, अर्थात् राज्य के उदघाटन के समय में किया था, पाते हैं।

मसीह का पृथ्वी के ऊपर प्रगटीकरण परमेश्वर की ओर से इस संसार की अन्तिम बार पुनः स्थापना का आरम्भ था।

हम मसीह में अपने विश्वास को रखने, और केवल उसमें ही रखने में सही हैं।

B. निरन्तरता (51:52)

नया नियम राज्य की निरन्तरता के ऊपर ध्यान देता है, वह समयावधि जो कि मसीह के प्रथम और द्वितीय आगमन के मध्य में है, जिसकी भी पुनः सृष्टि होनी है।

2 कुरिन्थियों 5:17 :
"इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई हैं।"

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस प्रसंग का यह हिस्सा वास्तव में इस तरह से अनुवाद किया जा सकता है कि, "यहाँ पर नई सृष्टि है।" जब लोग बचाए जाने वाले विश्वास में मसीह में आते हैं, तो वह एक नए क्षेत्र, एक नए संसार, एक नई सृष्टि का हिस्सा बन जाते हैं।

पौलुस भी एक व्यक्ति के व्यक्तिगत् उद्धार की प्रक्रिया को अन्य तरीके से रेखांकित करता है जो कि मूसा के सृष्टि के लेख के ऊपर आधारित है।

कुलुस्सियों 3:9-10 :
तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है।

C. पराकाष्ठा (54:46)

उन्होंने सृष्टि के विषयों को मसीह के कार्य की अन्तिम अवस्था के ऊपर भी लागू किया जो कि – राज्य की पराकाष्ठा थी।

इब्रानियों के लेखक ने यह देखा कि परमेश्वर का सब्त का दिन अन्तिम छुटकारे के लिए एक आदर्श प्रतिछाया थी जिसे हम तब अनुभव करेंगे जब मसीह का पुनः आगमन होगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

सबसे ज्यादा प्रशंसनीय प्रसंगों में से एक जो कि मसीह के दूसरे आगमन के साथ मूसा रचित सृष्टि के लेख के शब्दों में पहचाना जाता है, प्रकाशितवाक्य 21:1 है।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को नए आकाश और नई पृथ्वी के द्वारा पुनः-रचित कर दिया गया है, परमेश्वर और उसके लोग इकट्ठे नए संसार की इस व्यवस्था का आनन्द लेंगे।

मसीही विश्वासी अक्सर उनकी शाश्वत आशा को सृष्टि से तोड़ लेते हैं।

राज्य के उदघाटन, निरन्तरता, और पराकाष्ठा में परमेश्वर संसार को इसके अन्तिम आदर्श के मार्ग - जो कि उसके लोगों के लिए एक अद्भुत नई सृष्टि का है, के ऊपर रख देता है।

VI. सारांश (59:09)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. किन दो रूपों में उत्पत्ति 1:1-2:3 प्रेरणा-प्राप्त है? स्पष्ट करें।

2. उपलब्धता और परस्पर-क्रिया के आधार पर इन अध्यायों की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करो।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. मूसा ने ये अध्याय क्यों लिखे?

4. उत्पत्ति 1:1-2:3 के मूलभूत सिंहावलोकन को सारगर्भित कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. उत्पत्ति 1:1-2 में अन्धकारमय अव्यवस्थित संसार की साहित्यिक संरचना क्या है?

6. उत्पत्ति 2:1-3 में आदर्श संसार की साहित्यिक संरचना क्या है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. उत्पत्ति 1:3-31 क्रमबद्धता के छः दिनों की साहित्यिक संरचना क्या है?

8. किस प्रकार ये साहित्यिक संरचनाएँ मूसा के लिखने के उद्देश्य को समझने में हमारी सहायता करती हैं?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. अन्धकारमय अव्यवस्थित संसार का मूल अर्थ क्या है?

10. आदर्श संसार का मूल अर्थ क्या है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

11. क्रमबद्धता के छ: दिनों का मूल अर्थ क्या है?

12. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार नए नियम के लेखकों ने सृष्टि की कहानी को राज्य के उदघाटन के साथ जोड़ा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

13. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार नए नियम के लेखकों ने सृष्टि की कहानी को राज्य की निरन्तरता के साथ जोड़ा।

14. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार नए नियम के लेखकों ने सृष्टि की कहानी को राज्य की पराकाष्ठा के साथ जोड़ा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. मूसा के दिनों की सृष्टि की अन्य कहानियों के विपरीत परमेश्वर के मुख से निकला हुआ वचन ही एक क्रमबद्धता को लेकर आया और उसने अव्यवस्था को दूर किया। किस प्रकार परमेश्वर के सृष्टि करने का तरीका आपको उसकी आराधना करने के लिए प्रेरित करता है?

2. मूसा के आदिकालीन इतिहास का उद्देश्य इस्राएल के पलायन और विजय को यह दिखाने के द्वारा वैध ठहराना था कि वे उस व्यवस्थित तरीके के अनुसार था जिसे परमेश्वर ने संसार के आरंभिक इतिहास के दौरान स्थापित किया था। किस रूप में सृष्टि की कहानी की समझ आपको इतिहास के भीतर आपके अपने जीवन को समझने में सहायता करती है?

3. इस्राएली प्रतिज्ञा की भूमि में परमेश्वर की आशिषों को पहचानने में असफल रहे, इसकी अपेक्षा उन्होंने सोचा कि मिस्र ही काफी अच्छा था। किन रूपों में हम मसीह के उदघाटन की आशिषों को समझ नहीं पाते और संभवतया "काफी अच्छे" की लालसा रखने लगते हैं?

4. जब पौलुस ने 2 कुरि. 5:17 में कहा कि विश्वासी नई सृष्टि हैं, तो उसने दर्शाया कि विश्वासी एक नए क्षेत्र, अर्थात् नए संसार का हिस्सा बन जाते हैं। यह आपको किस प्रकार महसूस कराता है कि आप न केवल एक नई सृष्टि हैं बल्कि एक नए रचे गए क्षेत्र का हिस्सा हैं?

5. डॉ. प्रैट ने उल्लेख किया कि मसीही अक्सर अपनी अनंत आशा को सृष्टि से अलग करके रखते हैं। दूसरे शब्दों में, हम कल्पना करते हैं कि हम हमारी अनंतता को स्वर्ग के आत्मिक संसार में बिताएंगे। परन्तु नया नियम सिखाता है कि हमारी अनंत मंजिल नया स्वर्ग और नई पृथ्वी है। किस प्रकार पुनः रचित ब्रहमांड की नए नियम की शिक्षा वर्तमान संसार के आपके दृष्टिकोण को प्रभावित करती है?

6. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org